The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 3 | March 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

मालती जोशी की कहानियों में नारी चेतना

प्रेमलता भारती, शोधार्थी, हिंदी विभाग
शोध निर्देशक-डॉ0 के0 सी0 जैन
विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, टीकमगढ़ (म.प्र)

ARTICLE DETAILS
Research Paper
Keywords :
समकालीन, प्रतिभा, यथार्थवादी, अभिव्यक्ति, दाम्पत्य, विचित्र, सृजन

ABSTRACT

साठोतरी हिन्दी साहित्य के महिला कथाकारों में मालती जोशी का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। मराठी भाषी मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मी मालती जोशी का समकालीन कथा साहित्य में सक्रिय योगदान रहा है। मालती जोशी ने अपने कथा साहित्य में समकालीन सामाजिक परिवेश, नारी जीवन की संवेदना, नारी की विद्रोह भावना और नारी मन को अपनी कहानियों के माध्यम से स्वर दिया है। उनकी समकालीन सामाजिक कहानियों में अनमेल विवाह की समस्या, बहुविवाह, अनैतिक सम्बन्ध और पुराने और नये रीति-रिवाजों आदि समस्याओं को यथार्थ रुप से उजागर किया है। निस्संदेह रूप में कहा जा सकता है कि उन्होंने अपने कथा साहित्य में विविध विषयों को यथार्थरूप से अभिव्यक्त कर अपनी अप्रतिम सृजन प्रतिभा का परिचय दिया है।

भूमिका-

यथार्थवाद का साहित्य में प्रयोग निस्संदेह एक क्रांतिकारी परिवर्तन है। साहित्य में लगभग सभी प्रकार के यथार्थवाद, प्राकृत यथार्थवाद, अति यथार्थवाद, मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद, यथार्थवाद के अनेक भेद क्यो न हो परन्तु उसका लक्ष्य एक ही है। मनुष्य द्वारा जो देखा गया, उसका यथार्थ वर्णन करना और जो अनुभव किया गया उसको आरंभ से अभिव्यक्त करना ।

मालती जोशी ने अपनी कई कहानियों में उन कामकाजी नारियों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है, जो घर और बाहर दोनों तरफ पिसती है। दो-दो हुक्मरानों के आदेशों पर नाचती हैं। वर्तमान युग में नारी केवल भोग्या या बच्चे जनने की मशीन ही नहीं रह गई अपितु रुपया कमाने का यंत्र भी बन गयी हैं।

शोध विस्तार:

मालती जोशी ने वैसे तो अधिकांश कहानियाँ सास-बहू से सम्बन्धित लिखी हैं, जिसमें सास अधिकतर विधवा ही है। परन्तु दो कहानियाँ ऐसी हैं जिनमें विधवा नारी पर ही जोर दिया गया है। उसमें से 'सती' कहानी में तो विधवा होने पर भी सारे रीति-रिवाजों का उल्लेख किया है। छोटा सा श्रृंगार, मेंहदी महावर रचाना, माँग से सिंदूर भरना फिर नदी पर ले जाकर चूड़ियाँ तोड़ना, खाड़-रगड़कर महावर छुड़वाना, सिंदूर धुबलाना आदि क्रियाएँ बड़ी क्रूरता से की जाती हैं। घर से जब सारे मेहमान जाने लगते हैं तब चाची को घूँघट निकालकर एक कोने में बिठा दिया जाता है। सब बड़े-बूढे उसके आँचल में रुपये डालते हैं जैसे वह भिखारिन हो। इसके पीछे यही संकेत होता है कि भविष्य में उसे औरों की दया पर ही जीना है। 'मोरी रंग दी चुनरिया' कहानी में तो उससे विधवा का नाटक करवाया जाता है ताकि उसके पति के जमा पाँच लाख उन्हें मिल सकें।

कभी-कभी युवावस्था में भावना के अधीन होकर अंधे प्रेम के कारण पुरुष और नारी में आकर्षण इतना बढ जाता है कि उन्हें एक-दूसरे के सिवा दुनिया में कोई चीज बढकर नहीं लगती । किन्तु विवाह होने के बाद कुछ सालों में ही जब वास्तविकता का सामना करना पडता है तब पर कटे पंछी की भीति असहायता ही नसीब में आती है। 'अस्ताचल' कहानी में कल्याणी को डर रहता है कि उसकी बेटी चित्रा भी उसके समान गलती न कर बैठे। पति के बारे में वह कहती है- "कितनी विचित्र होती है यह मन की दुनिया। आज इतना हेय लगने वाला यह प्राणी किसी दिन मेरे लिए संसार का सबसे अलौकीक पुरुष था। किस श्रद्धा से, किस आस्था से अपना तन- मन दे बैठी थी मैं। जो महीने का गर्भ लेकर किस दर्प से माँ के सामने आ खडी हुई थी। तब हाँ करने के सिवा उन लोगों के पास कोई रास्ता ही नहीं था।

कैसा गौरव- मिश्रित उल्लास था मेरा ।"१. बेटी भी किसी को दिल न दे बैठे इसलिए वह उसका जल्दी विवाह कर देती है। क्योंकि उसका जीवन तो बरबाद ही हुआ है- "पर दो बच्चों की माँ होते-होते ही यह जान लिया कि जिससे मेरा विवाह हुआ है, वह एक अत्यन्त साधारण व्यक्ति है। भव्य दिव्य, जो भी था, वह मेरी कल्पना थी। यथार्थ उस कल्पना को झकझोरने वाला ही था। उस क्षण मन में एक कडवाहट ने जन्म लिया, जो धीरे-धीरे पूरी जिन्दगी में उतर गई थी। एक झुंझलाहट, एक खीझ, एक पश्चाताप जैसे यही मेर परिभाषा रह गई हो।"२.इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में पति की अकर्मण्यता के कारण का भ्रमनिरास हो जाता है।

मालती जोशी जी ने अपनी कहानियों में विधुर विवाह का उल्लेख करते हुए स्त्री की मनोदशा का भावात्मक चित्रण किया है। कहानी 'छोटी बेटी का भाग्य' में सुमन सताईस साल की उम्र में परिवार वालो को प्रो. शर्मा नामक विधुर से विवाह के लिए इन्कार कर देती है। किन्तु पिता की मृत्यु तथा भाई की उदासीनता के कारण उसे एक दरिद्र युवक से विवाह करना पडता है। बहुत बेमन से वह उसे स्वीकार करती है। "उसे दरिद्र अनाथ युवक की गृहस्थी की गाडी खींचते हुए वह अक्सर हाँफ उठती धुँआती रसोई में खाना बनाते समय, फटे कपडों को रफू करते हुए या जले हुए बर्तनो को रगडते हुए उसे अक्सर प्रो. शर्मा की जमी जमाई गृहस्थी, सजा संवरा घर याद आता और वह अपने आप पर खीज उठती। पैरों पर कुल्हाडी मारना इसी को तो कहते हैं।"३. यही पीडा उसे जीवन में आगे भी झेलनी पडती है। विवाह के बारह साल बाद उसके पास वह सब कुछ है जिसकी उसने कभी कल्पना नहीं की थी। किन्तु सुमन माँ को प्रति जवाब देते हुए कहती है कि "हाँ, आज मैं रानी हूँ। बारह साल बाद तो धूरे के भी दिन फिरते हैं। मेरे भी दिन बदले हों तो आश्चर्य क्या है?"४. तब सुरेश सुन लेता है। उसका मन दुःखी होता है। वह पत्नी से कहता है "सुमन। तुम्हारे चेहरे पर

मुस्कान की एक रेखा देखने के लिए मैंने क्या नहीं किया। पागलों की तरह दिन-रात खटता रहा, अपना खून-पसीना एक करता रहा। तुम्हारे मन के अभावों को भरने के लिए मैंने अपने आदर्शों की भी परवाह नहीं की। फिर भी तुम्हारे लिए मैं धूरा ही बना रहा ।"५.इस प्रकार प्रस्तुत कहानी से स्पष्ट होता है कि मन के विरुद्ध विवाह होने पर बाद में कितनी भी ऐश्वर्यता, सुख-सुविधा उपभोगने के लिए क्यों न मिले मनचाहे जीवनसाथी के आगे वे भौतिक चीजे सब तुच्छ होती हैं। उमंग और जोश के दिन निकल जाने के बाद सिर्फ बोझ के समान जीवन को ढोना पडता है। यहाँ पति का कोई दोष नहीं है वह परिस्थिति से गरीब होते हुए भी पत्नी के लिए सब कुछ जुटाता है। किन्तु पत्नी उसे समझती नही। इसलिए उनके दाम्पत्य जीवन में मेल नहीं बैठता। कहानी 'रानियाँ' में नायिका वंदना है। नायक कुमार की शादी हुई है।

यह बात न जानते हुए वंदना उससे प्यार करती है। कुमार भी उसे चाहता है लेकिन अंत में वंदना जानती है कि कुमार दो बच्चों के बाप हैं। तब उसे अपने आप पर तथा कुमार की पत्नी पर दया आ जाती है। वह कहती है कि "हम बीसवीं सदी के अंतिम छोर पर खड़े हैं। तुम कोई मध्ययुगीन सामंत नहीं हो कि रानियों की एक फौज पाल लोगे।"६.आदिकाल से ही भारतीय समाज में किसी न किसी रूप में नारी शोषण विद्यमान था। नारी चेतना जागृत होने के बाद वह प्रतिरोध करने लगी है जो इस कथन में स्पष्ट दिखाई दे रही है। नई चेतना और नया व्यक्तित्व उसमें उभरकर आया है। वह अपनी ताकत को सही अवसर पर प्रयोग करते हुए पुरुष वर्चस्व को चुनौती देने लगी है। अब समाज के हर क्षेत्र में उसका प्रवेश हो चुका है। यहाँ तक कि राजनीति में महिलाओं के लिए तैंतीस फीसद आरक्षण का प्रावधान है। शिक्षा एवं आर्थिक स्वतंत्रता ने उसके व्यक्तित्व विकास में खूब सहारा प्रदान किया है इसलिए अपने प्रति होने वाले अन्यायों के प्रति वह विवेक के साथ विरोध करने लगी है।

'अपदस्थ कहानी में स्त्री का आक्रोश ही दिखाई देता है। छाया के बेटे ने प्रेम विवाह किया लेकिन पति बेटा और बहू को घर आने से मना करते हैं। तब छाया बताती है कि "यही कि ईंट,गारे और सिमेंट से जो बनता है, वह सिर्फ मकान होता है। उसे घर की शक्ल तो औरत देती है।"७. इसमें अपना हक माँगने वाली औरत को दिखाया गया है। एक घर को पूर्ण बनाने में औरत की भूमिका महत्वपूर्ण है। लेकिन समाज में उसके वजूद को अनदेखा करते हुए उसके ऊपर अत्याचार हो रहा है। घरेलू औरत जो काम करती है उसे कोई महत्व नहीं देता। बाहर जाकर कमाने वाला पुरुष के ऊपर ही सारा अधिकार होता है। इन सबका कारण पुरुष सत्तात्मक सोच विचार ही है। परंतु अब स्त्री की आत्मचेतना ने उसे सिखाया है कि घरेलू काम भी कम महत्व का नहीं है। आज कल घर में बैठते हुए 'ऑनलाइन जॉब' करने की सुविधा मौजूद है।

'ए नोन डेव्हिल' कहानी में चित्रा नायिका है। वह अकेली होकर घर में रहती है। कुमार साहब घर आकर उसे साथ देने का प्रयास करता है और चित्रा के साथ बीत गये पल में मसाला डाल कर ऑफिस वालों से बताता है। इसमें गुस्सा होकर वह कहती है कि मैं अकेली ज़रूरी हूँ, बट आय एम नॉट लोनली। एंड नॉट अवेलेबल ! माइंड यू।"८. पुराने ज़माने से तुलना करते वक्त आज की स्त्री बहुत कुछ बदली हुई दिखाई देती है। अपने आपको ज्यादा परिपक्व दिखाने की कोशिश कर रही है। किसी की गुलाम बनकर नहीं, बल्कि अपनी अस्मिता की रक्षा करते हुए ज़िन्दगी जीना चाहती है। एकांत जीवन जीने में संकोच नहीं करती तथा किसी को साथी बनाना भी नहीं चाहती। अपनी ज़िन्दगी अपनी मर्जी से जीने में वह खुशी ढूँढती है क्योंकि औरों के पैर के नीचे अस्तित्व दबाकर रहना उसके व्यक्तिव विकास की प्रक्रिया

में बाधा डालती है। इसलिए ऐसी प्रवृत्तियों को नकारने का प्रयास वह अब कर रही है। आधुनिक नारी की इस आत्म विकास को सटीक ढंग से लेखिका ने इसमें दिखाया है।

कहानी है-इंतहा मेरे सब्र की' नायिका मीना इसकी मुख्य पात्र है। ससुराल जाकर उसे पूरा घर सँभालना पड़ता है। वह बहुत कुछ सह लिया बाद में स्थानांतरण के द्वारा दूर कहीं जाकर रहने को सोचती है। बताती है कि "मैं अपने बच्चों के कुम्हलाए चेहरे नहीं देख सकती। मैं उन्हें इस कलह-क्लेशपूर्ण वातावरण से दूर ले जाना चाहती हूँ। उन्हें एक स्वच्छ सुंदर माहौल में बड़ा करना चाहती हूँ।"९. कर्तव्यों के बोझ से लाद रही स्त्री को अधिकारों के प्रति किस प्रकार सचेत होना है, इसकी अभिव्यक्ति हुई है। चेतना जागृत होने के बाद वह समाज में आगे बढ़ाने लगी है। किसी की प्रशंसापात्र नहीं बनना चाहती। माँ-पापा के बीच की लड़ाई बच्चों के मन को बहुत प्रभावित करती है। मानसिक संघर्ष झेलने के लिए वे बाध्य बनते हैं। इन सबसे बचाकर स्वतंत्र जीवन जीने का आत्मविश्वास आज की स्त्री ने पाया है। पहले स्त्री को ऐसा लगा था कि बिना पुरुष के सहारे से ज़िन्दगी बिताना निरर्थक है। इसलिए कम उम्र वाली लड़की को बूढ़े मर्द से शादी करवाती है। उस रिश्ते को वह खुशी से निभाती भी थी। लेकिन जल्दी ही पति मर जाता है और वह वैधव्य झेलने के लिए बाध्य हो जाती है। किंतु आज शादी कब, किससे, कैसे होना है इन सारी बातों पर निर्णय लेना का अधिकार स्त्री को है। शादी के बाद उसकी मर्जी के अनुसार जी नहीं पाती तो पति से अलग रहने के लिए बिलकुल नहीं हिचकती। स्त्री की इस बदलती छवि का अंकन लेखिका ने किया है। चर्चित कहानी है 'पीर पर्वत हो गई' की नायिका निर्मल प्रदीप की पत्नी है। उसके एक बच्चा भी है। फिर भी प्रदीप दूसरी स्त्री से प्यार करता है। निर्मल उसे छोड़कर अकेले में रहने का और बेहिचक तलाक देने का निर्णय लेती है। बताती है कि "मेरी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। मेरा बी.एड पूरा हुआ जाता है। अगले सत्र में मुझे कहीं न कहीं नौकरी मिल ही जाएगी।"१०.इसमें औरत की नई चेतना दर्शनीय है। शिक्षा पाने की वजह से वह समस्या के प्रति जागरूक होने लगी है। अपनी इच्छा को बेहिचक, बिना कोई डर से निभाने में वह हिचकती नहीं है। अब जीने के लिएंडर पुरुष का सहारा उसे अवश्य नहीं है। क्योंकि वह कामकाजी बन गई है। आधुनिक नारी का यह रूप सशक्त होता जा रहा है। पराजय स्वीकार करके चुप बैठने के लिए आधुनिक स्त्री तैयार नहीं है। समाज में कई विकृतियाँ घटित हो रही हैं। लेकिन सबको निडर होकर वह सामना कर रही है। अब स्त्री सामाजिक संघर्षों से मुक्ति पाने की कोशिश कर रही है। इसमें उसने सफलता भी हासिल की है। किसी भी कीमत पर तनावों से मुक्ति पाकर वह आगे बढ़ रही है। तलाक से डरती नहीं है बल्कि उसे स्वीकार करके आगे जाने में ही जीवन का सार्थकता समझती है। स्त्री के इस नये रूप का चित्रण लेखिका ने इस कहानी में किया है।

'पटाक्षेप' कहानी की नायिका मीरा नौकरी करने के साथ-साथ नाटक में अभिनय भी करती है। सगाई के बाद आनंद मीरा को ये सब करने से मना करता है। लेकिन मीरा गुस्से में रिश्ते को ठुकारने का निर्णय लेती है। कहती है कि- "न मैं नौकरी छोड़ रही हूँ, न नाटक से मुँह मोड़ रही हूँ। हाँ, पर यह सगाई ज़रूर तोड़ रही हूँ। गुड बाय।"११.आज नारी अपना आत्मसम्मान बचाकर रखना चाहती है। तानाशाही को वह पसंद नहीं करती। अपने ऊपर पाबंदी लगाने वाले इन्सान को वह चाहती नहीं है। कैरियर को प्रमुखता देकर आगे बढ़ने में वह सक्षम हुई है।

वैवाहिक जीवन को उतना महत्व भी नहीं देती। वह पहले नौकरी तलाशती है। उसके बाद शादी के बारे में सोचती है। अगर कैरियर बन पाती तो साथी की ज़रूरत भी नहीं समझती। आज की नारी स्वतंत्र, सुखपूर्ण जीवन जीने को तत्पर होती हुईदिखाई देती है। घर वालों के साथ रहकर ही नहीं सबसे अच्छा पाने के लिए दूर जाकर पढ़ाई एवं नौकरी करने को वे तैयार होती हैं। इतना आत्मबल उसने पायी है।

'बाबुल का घर' कहानी संग्रह की एक कहानी है 'चाहत'। दिलीप नायक है। उसे एक लड़की पैदा होती है। तब घर वाले सोचते हैं कि लड़की के जन्म होने से माता-पिता की कमाई सब खर्च हो जाएगी। लेकिन दिलीप की बहन कहती है कि- "वो ज़माने लद गए जब लड़कियाँ केवल भार होती थीं। अब तो वे खुद भार उठाती है। ऐसा नहीं है कि सिर्फ लेने की हकदार हैं। दोनों हाथों से भर-भरकर देती भी हैं।"१२. आजकल लड़का-लड़की के बीच का भेदभाव कम होता जा रहा है क्योंकि लड़की भी लड़कों के समान कतार में आने लगी है। सारी परेशानियों को सहकर दुःखों को मन में दबाकर रहने वाली स्त्री अब नहीं रही है। वह शोषण का प्रतिरोध करने लगी है। अत्याचार के खिलाफ बोलने के लिए बिलकुल नहीं डरती। आत्मधैर्य उसमें अब पाया जाता है। इसलिए बाल विवाह, भ्रूण हत्या जैसी समस्याएँ भी ख़त्महो रही है। क्योंकि लड़की के मन में बचपन से ही ज़िन्दगी को लेकर एक सपने का जन्म होता है। जीवन में क्या बन जाना है, किस प्रकार जीना है आदि बातों को लेकर वह चिंतित रहती है। इसलिए लड़की के जन्म के बाद होने वाले खर्च को लेकर परेशान करने की ज़रूरत माता-पिता को नहीं पड़ती। आजकल नारी के मन में उत्पन्न हो गया तथा बोलने लगी कि पारिवारिक मामले में औरत के समान ज़िम्मेदारी पुरुष की भी है। इसलिए स्त्री के ऊपर छोड़ देना सही बात नहीं है। आधुनिक नारी जीवन में उच्च पद पर पहुँचने के लिए सक्षम होती हुई देती है।

कहानी 'आस्था के आयाम' की नायिका कौमुदी के माँ-बाप वर्षों से अलग रहते हैं। वह धीरेन्द्र से प्यार करती है। लेकिन माँ-बाप अलग रहने से धीरेन्द्र के घर वाले शादी मना कर देते हैं। कौमुदी बताती है कि- "अगर माँ मेरे अभिभावक के रूप में आपको ग्राहृय नहीं हैं तो मुझे भी यह रिश्ता मंजूर नहीं

है।"१३.आज की स्वाभिमानी स्त्री के लिए अपना अलग निर्णय एवं मत है। किसी के कहने पर वह ज़िन्दगी जीना नहीं चाहती तथा हमेशा आत्माभिमान को बचाकर रहना चाहती है। सिर्फ विवाह को ही वह ज़िन्दगी की आखिरी शर्त के रूप में स्वीकार नहीं करती। आजकल पुरुष द्वारा करने वाला सारा काम स्त्री भी करने लगी है। कोई भी काम उसे कठिन महसूस नहीं होता। समाज के उच्च स्तर तक पहुँच गयी कई स्त्रियाँ जैसे कि प्रतिभा पाटिल, कल्पना चावला, कर्नम मल्लेश्वरी आदि हमारे देश में हैं जो गौरव की बात है। विवाह को ही ज़िन्दगी का आधार मानने वाले लोगों के ऊपर लेखिका ने अपना मन्तव्य रखा है। कहानी 'कुहासे' में स्वाति नायिका है। वह अजित से शादी करती है। एक बच्चा भी है किंतु सिर्फ शारीरिक आवश्यकताओं के लिए विवाहोपरांत जीवन जीने को तत्पर पति को वह छोड़ देती है। वह कहती है कि- "दुख की की अनुभूति के लिए हृदय की आवश्यकता होती है। जो आदमी सिर्फ़ शरीर की भूख को..."१४. सभी अमानवीय व्यवहारों को झेलकर जीने वाली स्त्री अब नहीं है। पुरुष सत्तात्मक मानसिकता के

शिकार बनकर आजीवन जीवन व्यतीत करने को आज की नारी तैयार नहीं होती। अपने शरीर के ऊपर मर्जी के बिना पूर्ण अधिकार जमाने के लिए वह किसी को को इज़ाजत नहीं देती तथा ऐसा करने का प्रयास किया तो अदालत तक जाने के लिए वह संकोच नहीं करती। चाहे स्त्री समाज के किसी भी स्तर से हो उच्च वर्ग से, मध्य वर्ग से या निम्न वर्ग से वह अपनी आत्म रक्षा करना सीख लिया है। लेकिन आज के ज़माने में पैसा कमाने के लिए मन मर्जी से गलत रास्ते में चलने वाली स्त्रियाँ भी हैं जो इसके लिए अपवाद है।

निष्कर्ष:

मालती जोशी मध्यवर्गीय नारी की क्षमता से परिचित हैं तथा कमियों को जानती भी है। पुरानी गंदी मानसिकता का विरोध करते हुए स्त्री को स्वतंत्रता दिलवाने का पूर्ण प्रयास वे अपने लेखन के माध्यम से करती हैं। उनके पात्र बदलते परिवेश के अनुरूप चलने को चाहने वाली है और वर्तमान विसंगतियों का शिकार होते हुए भी संघर्ष करने के लिए अग्रसर है। उनकी रचना में नया नैतिक बोध तथा नयी मूल्य दृष्टि दिखाई देते हैं। वैश्वीकरण के दौर में उत्पन्न आर्थिक परिस्थिति का असर मध्यवर्गीय जीवन पर कैसे हो रहा है, पारिवारिक जीवन में क्या बदलाव आया है इत्यादि विषयों को भी उन्होंने अभिव्यक्ति दी हैं। पारिवारिक रिश्तों के बीच से शुरू होकर समस्या को समाज से जुड़ने का प्रयास उन्होंने किया है। उनकी रचनाओं में परिवर्तित जीवन मूल्यों और नारी जीवन की स्थिति का यथार्थ

चित्रण देखा जा सकता सकता है। ऐसे तमाम तरह के परिवेश को मालती जोशी अपनी कहानियों में बड़ी सघनता और सूक्ष्मता से पूरी पठनीयता के साथ उकेरती हैं। कथ्य और शिल्प में सरलता और मन को छू लेने वाली क्षमता का प्रयास उनकी ओर से हुआ है। कठिनता को नकारकर सरल, सहज भाषा का इस्तेमाल वे किये हैं। इसमें स्थानीय शब्दों के साथ अलंकारिक शब्दावली का भी प्रयोग है जिससे कहानियाँ मार्मिक तथा हृदय स्पर्शी बन पड़ी है। इसलिए सबको आसानी से समझ भी सकते हैं। उन्होंने खुद कहा है कि कहानियों का कथ्य कभी अपनी अनुभूति है और कभी अपनों की। इसमें अपनों की संख्या बहुत विस्तृत है। इस प्रकार मालती जोशी ने स्त्री जीवन के विविध आयामों को अपनी लेग मज़बूती से रखकर पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियों के प्रतिरोध का स्वर दिखाने में सक्षम होते हुए दिखाई देती है भी कुशल पारिवारिक जीवन बिताते हुए उनका लेखन कार्य प्रवाहमान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

१. मध्यान्तर, मालती जोशी, पृष्ठ ६३

२. वही, पृष्ठ ६३

३. मालती जोशी की कहानियाँ, मालती जोशी, पृष्ठ १२०

४. वही, पृष्ठ १२१

५. वही, पृष्ठ १२२

६. बोल री कठपुतली, मालती जोशी, पृष्ठ १७

७. बोल री कठपुतली', किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ५६.

८. 'मिलियन डॉलर नोट तथा अन्य कहानियाँ", परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ ३४.

९. 'औरत एक रात है', परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ ७६.

१०. 'बाबुल का घर', साक्षी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ ५४.

११. 'हादसे और हौसले', परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ ७७.

१२. मालती जोशी की लोकप्रिय कहानियाँ", प्रभात पेपर बैक्स, नई दिल्ली, पृष्ठ ४३.

१३.10 प्रधिनिधि कहानियाँ", किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ ८७.

१४. 'एक और देवदास', साक्षी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ ४५.